

सततं रक्षां सत्तु अदि बुता नृणां । विविधैर्दुष्टैश्चैव वृत्ताम्भैश्च वनात्संस्थम्
सातकं धिकावली प्रलम्भा । मसदा । लेवं । अङ्गुलम्भैश्च । अपिपिलुम्भैश्च

धर्मरत्न वजाबायं पुरतः श्री महाबिहार

II-176

सतगुरुवा मरुतिदुगा २॥ विविधिदुहरववटु वरुवनात्रलं ६५
मात्रकाधिकावलीप्रसमा। मसदा। लेवं। मृगुगमादि। अथपिपुष्य

धर्मरत्न वजावायं गुरत श्री महाविहार

II-176

विशुमात्रदा श्री कृष्णसहाय

२३५२

विशुमात्रदा कथा विरह्यामा तत्रादिहृदिमुक्तमपवा संव. नकू वंकिन नादय ३॥

ॐ नमो गंगाय ॥ अथ यत्तु गङ्गा विविधं कुरु ॥ जिह्वय कुरु नदं कुरु ॥ आनं ॥
 मित्रिक दसा जा कया नन को य माल ॥ वीसिग वंदा व जो थू य क ॥ धव ति या द
 काय उ न का गाल सयी न मा उ स पू या का य उ न का गाल स र ॥ वन वल १
 मंश य वल उ थ ॥ थ का य उ न न क म त व ॥ ध व ती न व या व मा उ स का य उ न
 पू य व दा खे र व व स ला व क र ॥ ॥ वा का सा र्थ मा उ दू य वि व लं द्रा य मा
 न ग व उ उ ग र स र्थ न ॥ प द वा स न य ल प ति वा य थ सि व लं त थ म य सा र्थ न
 न ॥ लि व या उ व स की ल पा उ न र व व स उ न पा उ न लि व लं उ म धा ला या ॥
 ॥ उ म धा जा लि व स क र व क र ॥ क र त या द्रा य क र त र ॥ ॥ पू जा या य

म २

ॐ उलपा ॥ ॐ दमा सनं लया दी य तां ॥ ॐ कील पा ॥ ॐ दमा सनं लया दी य तां ॥
 ॐ दी की ल ॥ ॐ दी नी ल उ धा ना पा ॥ ॐ द मा सनं लया दी य तां ॥ ॐ उल पा ॥
 र्थ या उ प त्रि पू र्ण ॥ ॐ व की ल पा ॥ ॥ त र ४ लि व पू उ नी ॥ ॐ हा ट कं ध ना य क
 ता न्ना य म न्ना न नू द य थ ता धि य न ॥ ॐ द मा सनं न म ४ ल या दी य तां ॥ पू र्ण ॥ द द्रा व
 ला ल व द नं यु क र ॥ क ति लं क र ॥ उ र्ध कं म हा म र्ध पु स्र न स्र ध ना र्म ॥ ॐ
 द ग र जा कु रं मृ तु मा ला वि र खि तं ॥ क र्म मा ल्या म्भ न र्वा र्ख न या र्म सि र्ख त क ॥ २
 ख दार्म का ल द लु च ध र्म ना उ र्ध नू य क ॥ ॐ व धा ला उ म ना जा य त र्म र्ध पु

जयं जाहार कं न्य नाय त्यादो जलसानी ॥ कीलसानी ॥ यक्ष म न सानी ॥ पूतजल
 सानी ॥ वनन मिन्दुल जक्षायवी त वृष्य ॥ पीतवृक्षुनः ना जाहल राजन ॥ य
 क्षान्नयष्ट का नैवर्ष्य ॥ धूपदीप ॥ ॐ देहलपुष्पतामूल धूप दीपने वद्यादिसक
 ल्यसिद्धि नमु ॥ ॥ स्तोत्र ॥ ॐ जसुनेनाग जेव्य दक्षिणैर्वेव सर्वदा ॥ यत कालव
 र्म पूज्य हार कं न्य न मा मुत ॥ जमायधर्म ना जाय म ल व नान कायक
 देव स्वताय का नाय स हं लोक क या यव ॥ उदम नायनी ना मा द क्षायय न म
 न ॥ वृ का द नाय विजा यविष्ट गुफा वै न मा हार कं न्य न देव म विष्ट

३

पूजाय नायेन ४। पाताल काकि नू पाय ४ धर्म ता धा वे न म ४॥ हार कं
 न्य नावेन विष्टैर्ब मिष्टिय विष्टु ममु ॥ ॐ तिहार कं न्य नावेन ४॥ ॥ अर्थय
 तु थ य ॥ ॐ जलयाग ॐ दमा लया दीर्गा ॥ न वै कीलव ॥ ॐ जलयाग य न मा धेय
 पविष्टु ॥ कीलव ॥ यद वाम न वाय ताय न हार ल स लालुत नाय क थ ॥ कृष्ण ल म ल
 आसन त ॥ ॐ य धर्म मूहोदि स ह्यु ता य पु त पि तु ॐ द मा स न ल या दी य र्गा ॥ ॐ
 द्वितीय सख ना सि कादि स सि ह्यु ता य त्यादि ॥ ॐ त तीय व कृष्ण गादि स सि ह्यो ॥ ॐ
 चतुर्थ वाह द या गुलि स सि ॥ ॐ पञ्च म ह दि ना शिलि मा दि स सि ह्यो ॥ ॐ षष्ठ म पाद

४

दुर्गा ली स सिद्धो ॥ ॐ सक म सु ग्मां स प्राय स सिद्धो ॥ ॐ नमः स त्व व ना मानि स सिद्धो ॥
 ॐ न व म स वी म स सिद्धो ॥ ॐ द ग म कृ त्यी या सा दि स सिद्धो य ना य य त वि लु ॐ द मा
 स न त्व या दी य तां ॥ ॐ त्या दि ॥ ॥ लय त स वि लु ता वा क् ॥ ॐ का क ह्वा न म ॥ ॐ व व व
 म त य वि पु र्ण ॥ ॐ द यि लु त्व या द रु म की य म य नि रु तां ॥ ॐ य ध म मू र्वा दि स सिद्धो य ना य
 य त वि लु त्व या दी य तां ॥ ॥ कि दू तां या त सा कि न कृ ति कृ ति वा क् ॥ ॐ स क ल नी
 उ ध रु ॥ ॥ मि वी क द न सा ॥ ॐ स रु ग्मा मि नि स हि ता य उ त रु वि लु त म् ॥ ॐ त्व या दी
 य तां ॥ ॥ ति ला द क वा क् ॥ ॐ वि रु ति ला द का द श्रु ति ला द र्हा स म त श ॥ ॐ यि

नमो ३

नमस्तुभ्य नमस्तुभ्य नमस्तुभ्य

पञ्चांग

ॐ म या द र्हा नि व ला क स ग कृ ति ॥ य ध म मू र्वा दि स सिद्धो य ना य य त वि लु त्व या
 ति ला द का र्हा त्व या दी य तां ॥ ॐ व द्वि ती या दि स र्वा ॥ ॐ ल स्ना न ॥ ॐ ल स्ना न ॥ ॐ ल स्ना न ॥
 प्रा न ॥ ॐ द न सि न्धु न य द्वा य वी त पू ष्य रु ल य क्ता न य द्वा त न व द्वा य दी य ॥ ॐ
 ॐ द रु ल य ना म्ब ल पू ष्य दी य न व द्वा दि स क ल्य सि दि न मु ॥ ॥ स्ना य ॥ ॐ य त वि त
 न नू पा नि मा क्ता र्थ क म्मे ल वि च द ॥ ॐ न कृ त क म्मे ल ग्मां कृ ति मा न व ॥ ॐ क
 वि रु न रा व न रु ट क ह्वा न ॥ ॐ त श ॥ ॐ व वि लु म या द र्हा नि व ला क स ग कृ ति ॥
 य त वि लु म ॥ ॐ वा क् य म्म त न पू नि ता ॥ ॐ दू रु य त नू पा नि वि लु त्व य न मा मु त ॥

गङ्गायितनमसर्वसंमुष्टविजयीरवा निवला कवृसंयाकया व अन्दा कर्म
 दिनी ॥ यतपिस्तु अर्चनविधतत्तं च दिवि यवियुस्तुममु ॥ ॥ उलपाणसर्वधु ७
 दावचितुसतिमिय ॥ ॐ उलादकार्यं त्रयादीयतां ॥ उर्वकील ॥ ॐ कीलादका
 र्यं त्रयादीयतां ॥ नेति लंथदावदायचितुसवाक् ॥ ॐ यकचितुगनरूपनवर्क
 कंचितनस्मृत ॥ तसर्वं किमायानितिलाशाममिधे जिता ॥ ॥ चितुसवतिमिय
 ॐ वमुदकार्यं त्रयादीयतां ॥ ॥ वृत्तदूदावचितुसवृत्त ॥ नितद्वधलन
 अदिकत ॥ डिङ्कूकूडिजित ॥ ॐ यतपिस्तु स्तुत्यासुपी तं त्रयादीयतां ॥ पितु

६२



खासवायक ॥ ॐ यायानिपूनातियनाकृतानि संहारुपायानिदि व प्रयागपू
 तानि कृत्वा जलविन्दुयागं रागीनथी लं नवदीययाकि ॥ ॥ यथसायानमाहू
 यादिथं यथदूना ॥ ॥ पुनः पदबासुजाय ॥ तावदानं ॥ दूलालयतस्तयकुण
 दामलज्जामनता ॥ ॐ काकायका कचितुस्तुत्या ॐ दमासुनं त्रयादीयतां ॥ उ
 व ॥ ॐ द्वानायद्यानचितुस्तुत्या ॐ दमासुनं त्रयादीयतां ॥ खवम ॥ लयतसज्जत
 याजमाप्रियमदूताप्रियायमानिमदामने सफज्जन्म कृतायायावलिगुडु उवायसा ॥ ॐ
 काकायता ॥ उतलपितु त्रयादीयतां ॥ ॐ ववखकलं जानो द्वी द्वा नोखज नोखनो

८

बकन काया उद्धर्तनयायका अतिलिन माय दूयक ॥ कुनकर्म यावक ॥ गमधि
 आदिनक भतन धनक ॥ गुनववमामरु नसा सखायक ॥ अवनदास काय सानया
 या ॥ गमम किकान धनक ॥ वमु रू नहायावविय ॥ लीहनकायक ॥ कोतालवानच
 यक काय ॥ रातनभतय काव कायक ॥ सगुकि कियक ॥ संपालयावक ॥ कोतालसनी
 ख सतुत याव ॥ सूर्य स्की लख स्वया नतनक ॥ लख कृपा दान काव ॥ अमु
 न लख स्वया कल हाय काव वा प्रत या पा से दे लखत ॥ वा प्रत नधियक ॥ गोव
 यक ॥ इसकन साय ॥ वा प्रत लख वतस्य क अय ॥ कृया मूल दाल स लसाय

लख वलि हाल ॥ उका प्रकान निर्मि कुन ॥ चल यति वजि रू याव ॥ ता ल न यत ॥ म
 न रू ता उ जान त्याय ॥ धनि वीरु व नत ॥ स्थान वादा सत ॥ पूच न य ॥ पालन पुडा
 व वाय ॥ गुरु या न धिय ॥ मरु न ल या ॥ अल ति रु व नत ॥ त वान हाल ॥ इड
 न जवन जाने पात काल ख वी जान ॥ ल सा या था म म ॥ कु वा कु हा या व ॥ हा य क
 जान ॥ व स थ हा था य स ॥ कु वा कु हा या व ॥ पारवा का स ॥ क पू य ॥ रघा न सिय माल ॥
 वा प्रत न या दू न सा ॥ थ न मख सा थ या म माल ॥ जि दू न नि खाल माय ॥ थ न जि दू
 य म वि वि रू ना ॥ ॥ अथ उका द सा हा वि वि ॥ रि न नि व का या ॥ पू जा या या

ॐ तातकं न सदा निवाय ०० द मा सनं दु यति छु ता ॥ उत द्वा कून उल सानं ॥
 चन्दन सिंदूर य द्वा पवीता ॥ य प्य रु ल हा उ ना ॥ नै व य धू य दी य ॥ ०० द रु ल
 य प्य ता न्च ले त्या दि ॥ स्ना तु ॥ ॐ नमो भो वा य मी ता य त्या दि ॥ अ ग ग न्धा दि ॥ ॥ थ
 न धू न का र्वा स रा त वि य ॥ ला सा रा य क पू ना ला य के द ला सा रु ग न ॥ थ हा म
 ल न क्र च व थ य ॥ य न न न र ग उ म ग ॥ र्य दा ति का र र्वा ख ग न रु य क ॥
 थ हा ग न उ रु न सा च की ति सि स्वा य ॥ का ल के क न वि ॥ ख उ वि या व मा उ रु
 य क न रु य ॥ धू न का व ला सा स र्वा र्य दा स च की ख दा व स मा ल जाल वि या क स मा

१२

ॐ का

न या च क ॥ थ न धू न का व पू जा या च क ॥ ॐ अ म क ग ग य उ मा न स पि तु न द ग
 म हा वा क्ता य ०० द मा स न उ पा ति छ ता ॥ य प्य उ य ति छ ता ॥ उ व रु स्ता र्वा च न्द न सिं दू
 र य द्वा प वी त य प्य ॥ व मु दि वि य ॥ द का य दा थ वि य ॥ के ति य न सि ज्वा दि न वि य ॥ ना सि व
 क ॥ ल य त ला य ॥ हा वि य ल य त या द व न त म क ॥ ल हि व क ॥ य उ मा न न थि य त क
 ल हि य ॥ म न का ला ज्वा दि न म व न ल हि व क ॥ धू य दी य ॥ ॥ क ग ति ल ग्दी त्या
 ॐ अ य वा ला हा क ल्ये ज्वा दि ॥ ग य वा व मु य क्ता र्वा पा रु नी ग य ना नी ॥ के व क्ता
 रु नी व व रु धू मी ग र्वा व न ॥ या द रु व ग व रु उ पा न क हा ग व न ॥ क रु नी रु क्ता

१४

का

उचपानपार्मिकमंजली ॥ शुक्रोदगतिरुदकं तं शुक्लं वाक्कानानिवारवानपान
 अविविधं पक्वान्नमख ॥ शुभन ॥ अमृक ॥ गणयजमानस्यपिपुनरुदगतिरुदकं तं शुक्लं वाक्कानानिवारवानपान
 मस्यग्निसंपादिकामनाथं मरुवाक्कानानिवारवानपान ॥ दक्षिणविय ॥
 मरुवाक्कानानिवारवानपान ॥ दक्षिणविय ॥ मरुवाक्कानानिवारवानपान ॥
 द्विय ॥ नकं काननयता ॥ ॥ निवयाक ॥ अविद्युथलजन ॥ पूवाकं पू ॥ कावून
 वडि ॥ साधवि ॥ ३३ ॥ धलकसि साखन ॥ धनविद्युथया ॥ अमृक ॥ गणयजमानस्य
 पिपुनरुदगतिरुदकं तं शुक्लं वाक्कानानिवारवानपान ॥ दक्षिणविय ॥

१५

दावकायपिपु ॥ पिपुवालावमृउचिन ॥ अमृक ॥ गणयजमानस्यपिपुनरुदगतिरुदकं तं शुक्लं वाक्कानानिवारवानपान
 लुतस्मैउपतिष्ठतां ॥ उच ॥ तिलादकार्धं चन्दनं सिन्दूरं यस्माद्यवीतयुष्मं रुत
 लाऊनं धूपं दीपं ॥ ३३ ॥ दं रुतयुष्मतामृलधूपदीपं नैवशादिर्षंकल्पसिद्धिमेक
 ॥ सागु ॥ अं वलियमृखनिलयपिपुलाकनिवासिन ॥ अथितायावमानानां ॥ अक्री
 यंउतिष्ठतां ॥ कलापुथमनूयानि ॥ अमृक ॥ गणयजमानस्यपिपुनरुदगतिरुदकं तं शुक्लं वाक्कानानिवारवानपान
 पिपुमवव ॥ संपु ॥ सधलावा ॥ सधर्मासिद्धिकानर्त्ता ॥ तंनपिपुमसादलंनिवलाकंम
 दीयतं ॥ अगं ॥ ॥ अं ॥ अमृक ॥ गणयजमानस्यपिपुनरुदगतिरुदकं तं शुक्लं वाक्कानानिवारवानपान
 दक्षिणविय ॥ संपु ॥ सधलावा ॥ सधर्मासिद्धिकानर्त्ता ॥ तंनपिपुमसादलंनिवलाकंम

१६

॥ अविद्युथ ॥

क

四六

मिसातं रसस्य सर्वजीवेषु तान् विधिर्विष्णुः सदा ह्येव प्रिच्छति नृभिर्वृत्तान् तदाः
 श्वासात्रकाधिका वक्षुः प्रथमा मिसदा शिवः ॥ शिवं शिवकत्रं शमनं शिवा
 २० त्मानं शिवात्मम् ॥ शिवमार्गं प्रथमा मिसदा शिवं अत्र गन्धादि
 र्थात् शिवप्रकाशः ॥ पिबुधययात्तिलकृष्णभ्रासजगत्यादितीयकलाष्टमद्व
 ० दमासनं उपतिष्ठतां तृतीयकलाष्टमद्व। चतुर्थकलाष्टमद्व। पंचम
 कलाष्टमद्व। षष्ठमकलाष्टमद्व। सप्तमकलाष्टमद्व। अष्टमकलाष्टमद्व
 नवमकलाष्टमद्व। दशमकलाष्टमद्व। एकादशकलाष्टमद्व ० दमासनं उ

II-176

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

प्रेतश्राद्ध पवित्र

नमस्तु विष्णवे त्रायत्रैलोक्यपावनाय च ॥ तस्मै वस्त्रः प्रकाशमयः पाहिमी
दिननायक ॥ ॐ नित्यं स्मर्यते ॥ विप्रपादद्वयं यत्नं हस्ताभ्यां स्पृष्टवन्द
न ॥ तेषां पूज्यं तु त्वं नैवेद्यं सापि नष्टा कुम्भ ॥ ॐ नित्यं ग्राह्यं तस्मात्पाद
प्रक्षाल्य ॥

पतिष्ठतां । द्वादशाङ्गकलाश्रमः । अष्टादशाङ्गकलाश्रमः । पानमासि
ककलाश्रमः । उन्नमासिककलाश्रमः । नगपुत्राश्रमः । नित्यं
यः । द्वितीयकलाश्रमः । नैषपिष्टुक्तस्मै उपनिष्ठतां । तृतीयसंस्त
उत्थित ॥ नैव सर्वमिलादक । वन्दनं सिन्दूरं यक्षपवीतं । पुष्प

ॐ
 सिन्धु यक्षा यवोग पृथ्वी रुत लो जनः पू यदी यः ॥ ॐ देव
 यः अद न क लाऽम ई यि तुं द धा मु या द ना ॥ सर्व पा य वि वि ष्टु क्का वि ष्टु लो कं त्प
 ग द्वा ति ए न म्मा दि ॥ ॥ ॐ कू म्भ क स्व ना य स दानि वा य स्व स्तु न का सा र वं द
 पि ल्पु ष्ठा ॥ ॐ उ त्था य य स ॥ वि लु ष्ठा य ॥ ॐ स क्त्वा का य ॥ ॥ ला हा त सि य
 य कं ल क्का य ॥ वि लु ष्ठा य क च ॥ ॥ य ॥ मा उ द्भू या व व य ड य मा न
 पा य मा ला नि ष न न ॥ श्री ब्रा ह्म णे मा उ द्भू या व क्क व य ॥
 म मा न या ॥ ला ट कं स्व न

ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ गुरुभ्यो नमः ॥ अथ गुरुभ्यो नमः ॥ अथ गुरुभ्यो नमः ॥
 य या व कं ॥ अथादि ॥ ॥ यज मान स्य श्री गुरुभ्यो नमः ॥ यज मान स्य श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 तु निमित्तं यथ ननी ना ना ग्म यथा ग्म ॥ कुरु त्वा फि क मन
 कर्तुं श्री गुरुभ्यो नमः ॥ माहात्म्यं कावति ॥ पृथ्वी राजर्षी ॥ जवाक
 मु ॥ यज मान स्य ॥ वासुदेवाय ॥ वासुदेवाय ॥ वासुदेवाय ॥ वासुदेवाय ॥
 जने ॥ ॥ वना वदावर्त्तने ॥ ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ विनामः

२२

ह॥ ॐ अथ क॥ ॐ सिद्धं ॥ ॐ आ ग न मित् ॥ १० ॥ ॐ आ ह ॥ ॐ आ म न्त स ॥
 ६ ॥ ॐ ग ल न त्वा ॥ ॐ स आ जा ग ॥ ॐ अ ह म ह स्या दि ॥ ॐ स सि न ॥ ॐ आ ॥ ॐ
 या ॥ ल रु नी ॥ ॐ अ न्न य ग न ॥ ॐ न म ४ य न्मि म ॥ ॐ अ न्न य ग न ॥ ॐ आ सि ॥ ॐ म न्ना क्ति ॥ ॐ
 मि ह ॥ ॐ नि व द न्ने ॥ ॐ क य द्या म नी ॥ ॐ क य द्या मि व सि रु व नी ॥ ॐ क य द्या म् ॥ ॥ ॥
 य ज मान न न व ग क्ता या डा ला हा त स द्वा य ॥ ॐ ह म्मि य ह द य म्म म म ॥ ॐ स्या दि ॥ अ य य ॐ
 स क न न ॥ ॐ ग न य न म ४ ॥ ॐ म न्ना य ॥ ॐ ल द्या व य ॥ ॐ न म्म द्या य न म ४ ॥ ॐ सि ध व र
 ॐ क व य ॥ आ वा रु ना दि न्द ना क्ति म ४ ॥ अ य य ॐ य ल स न य ज मान हा य ॥ ॐ स

२४

॥ न ॥ आत्मन चंदन ॥ पर्व ॥ यजमान न द व रू जा मा च क ॥ खान त न ॥ ॐ न दि न ॥ ॐ न ह
 कालाय न म ४ ॥ ॐ ह्मि न न म ४ ॥ ॐ वि ना य का य ॥ ॐ ह्मि य रा य ॥ ॐ क न्दा य ॥ ॐ
 ॥ ॐ च द्या य ॥ ॐ आ य न म ४ ॥ ॐ स्या दि ॥ ॐ स का न्दा य ॥ ॐ ज य य ॥ ॐ
 अ न्ना य ॥ आ वा रु ना दि ॥ ग नी ॥ ॐ न ॥ ॐ स क स कि न ॥ ॐ ह्मि न न ॥ ॐ क न्द स
 ॥ ॐ व ॥ ॐ अ ति म य ॥ ॐ क य अ न्ना य स म ४ ॥ ॐ न का र्त्त य अ न्ना य म दि न का र्त्त म ४
 ॥ ॐ वि र्ग ॥ न क य म क न म्म ४ ॥ ॐ आ न्ना य कि दि ग न ॥ ॐ स ग ली सा ग ली सा ग ली स ग कि
 व म ४ ॥ ॐ व ॥ ॐ आ लो क म्म ४ ॥ ॐ न न क य य ॥ ॐ व य ॥ ॐ ल ग य ग ॥ ॐ स य य ॥
 नि र्ग ३

२८

दिल्लुट्टु नां न ज मरु मी॥ ने व अ॥ उं व लू न न न सा प न ने व अ प हिव द नी खा अ ला अ
न धा प य ल अ न रा य अ ट्टु नां॥ अ वि म न॥ ॥ य का न॥ प का न॥ श्री न न वि गी द धि की
उ म म नि ती॥ न क ना मृ त मृ त व ट्टु नां दी य तां वि रा॥ रु स॥ उं अ दि मा दि रु त प क
य धा का ल स म क री॥ र ह्य प द ल ला का ना जी व न पु ति मृ ट्टु नां॥ ना मृ त॥ उं ना मृ त
म ह्य ला का ना स ख र ज न का न की॥ दे व ला क वि र्य दि र्य दि न मृ ति मृ ट्टु नां॥ अ मृ त
आ दि॥ त त ४ व ज न॥ ह द या दि ग॥ त मृ अ मृ य अ मृ न कि मृ ज न॥ उं मा म दा य र॥
उं मा न दा य र॥ उं रि दि दा य॥ उं रा ग दा य र॥ उं त ज दा य र॥ उं तु कि दा य र॥ उं म क दा

२०

उं ध र्म दा य र॥ उं आ दि रा दि न द प ह र्या २॥ उं मृ ट्टा द ग ला क या ल र्या २॥ उं अ वि
आ दि न क र र्या २॥ उं वि रु क्ता दि या ग र्या २॥ उं म मा दि मा मि र्या २॥ उं पु ति प दा ति
प दा ति वि र्या न म र्या २॥ उं च तु मृ र्या २॥ उं मा द ग री द र्या २॥ उं प र व र र्या २॥ उं
ल प र्या दि प र्या ला क या ल र्या २॥ उं मृ ट्टु र्या २॥ उं य र र्या २॥ उं म
र्या २॥ उं स व स र्या २॥ उं क र र्या २॥ उं मा ल र्या २॥ उं
र्या २॥ उं मृ न र्या २॥ उं अ म र्या २॥ उं रा स र्या २॥ उं आ दि
उं ग र र्या २॥ उं रा न र्या २॥ उं स वि र्या २॥ उं दि वा क र्या २॥ उं

३३

नदानदत्तसौधनदजाहका ज्युदित्त त्यादिन वयह सुजायादास नार्थ ध्यान
 यादिवदस्तोत्र नदानयागनिष्ठजायायस्तोत्र सादाने धन ॥ ॐ यदत्तकृतम् ॥
 स्तुतस्तुतिगणनमया सर्वमादि स्थलीस्थाली कर्तुमर्हति ॥ ॐ ति य ॥ ७७ ॥ न ता अर्घ्य दद्यात्
 न त ॥ ता सु वापु न कृत न न मित्र मु जल नि धन य द्वा कृत कनवी न पूर्य ल निल न लु न कृत
 सुवर्ण मन्त्रादि ना अर्घ्य दद्यात् ॥ अर्घ्य ॥ ७७ ॥ गवाला ह ॥ अर्घ्या दि ॥ यज मान स्य य धा म सु क
 रु ल प्रा पि काम न या ग्रा सु यो य ल स्तु क सं यो प नि मि त दी य दान र्थ र्ग कर्म सा न

३४

ता सौ धार्थ सां गय स गण स्थ वि वा ना य र ग व ह श्री लू यार्थ ॥ ७७ ॥ द म र्थ ॥ ७७ ॥ स्तु त ॥
 ॐ ता सु वा सा न न र्ग व न द ना कृत ग र्हि त ॥ इ वा कृत रु ल मू की ॥ ७७ ॥ ता र्थ दि वा कृत ॥
 ॐ य दि सु र्थ सह यां ॥ ता जा ना नि ज ग त् य त ॥ अन र्क प य मां रु क्त ॥ ७७ ॥ ता र्थ दि वा कृत ॥
 ॐ य र्थ ॥ य ति स्तु ॥ ॐ म ना रु ति ॥ मी उ त र्क त्वा स्तु र्थ ॥ ७७ ॥ ॐ न म र्गु यार्थ द वा य
 प र्थ व न्न स्व नु पि ॥ ७७ ॥ ह स्तु दि वा न ग ती न मू र्क य पि तु लो य र्थ ॥ ७७ ॥ ह स्तु ल
 मा र्थ वि रु ध र्थ न जा म र्थ ॥ ह्नि त य ल्वा सा य ध र्थ ल्वा म र्थ व र्थ ॥ ७७ ॥ ता गु र्थ
 का र्थ द ध र्थ स र्थ ॥ त दे व ग कृत ॥ ७७ ॥ स र्थ ॥ ७७ ॥ ता लो क र्थ दि ता ॥ ७७ ॥ य र्थ

लो आ धा ए ला क पा ॥ आ दि त्या दि प्र स स ध्व त्व दं गा ॥ सार म कि का भा न
 फ का त नृ त्व भे व हि । न नि या ग मू क क र नि य ॥ दि नृ प स्तु भ व हि ॥ य त्वा
 वे ॥ स स ज य नि नि ल ग ॥ व भ्रा य ल गि यो ग्गा यो न न्यां यो ना क स य न ॥ सि च न न च म
 का य म नि ना ग म हा न ग न । रु ना नि स र्व लो का ना म य स र्ग क ना य प्रि ॥ य न त्वं चार्थ ग
 न न । पू जि ता तं वि दू वि ने ॥ व भ्रा द या दि ज न्मा ना न द हं ग च व न रू लं ॥ रु ति वि द्वा
 प म रू लं ~~स स~~ स म व ग न ॥ म म । क्रि य तं त स नं पा हि मा म न्य ग मि न व ॥ या धा
 ह पा प क मा नि यो या सा पा प स र व ॥ ग हि मा द व दं ग स र्व पा प रु ना स व ॥

३५

म धा वा ग नि ॥ अ उ ग न्धा दि ॥ न म स्ता ना ॥ ह्रां गे न ॥ म गु ल लू द र्थी नि व नि लू म लू ॥
 म गु ल वि स र्ज नं ॥ द व द मि ग्ता ॥ वा क ग पू जा द मि दानं ॥ उ आ हृ ष ॥ द वा ली वी
 द ॥ न्या स नि का य ॥ उ उ ह र्थ ॥ द वि स र्ज नं ॥ ना सूर्य सा की था य ॥ आ च म नी ॥ उ वि
 वृ ष ॥ रु ति सूर्य पू जा वि धि स मा य ॥ स्ना न ल क क्का य ध न क या र्ग पू जा य ॥ वा क
 श क वि स ॥ म य ॥ ल क म त क्का य क या र्ग थ ॥ पू जा र्ग नी ॥ उ र म रु त र्ग

३६

अ वृ षा स का र्क वि दू नि मो व स वि ग नू द ति ॥ उ क न स र्ग न न

श्री कृष्णाय नमः

रज्ययद्रसनिद्रविद्यविधिः ॥ ॥ द्रव्याः सुफलामाधिदयदय
नायगममयाः पश्चिमसाकक्षकान्तानिमासासफलामाधिदिव
नवायः कर्तुं वायामहादेवपूजायाः उगिनकठयूजायाचकाः
क्रयाश्रुत्साः वकनिद्रयाश्रुत्साधया ॥ ॥ महादेवपूजाहोदकव्य
नायकताकायममठाननूडायुताधियतयवृंदमासनत्वयादीयगा
नुर्ववाकनाह्वानचन्दनसिंदूरः श्रुतारयद्रापवीतः पूषाः पूषादी
पः नैवाद्यादि ॥ ॥ र्दरुलपूषागन्तुषूपदीपनैवाद्यादिसंकल्पसिद्धि

३६

मुहास्तोत्र ॥ असूनेनागनाडेव्यपूजिगीवेवसर्वदा ॥ पुतकालचसंपूषः हाटक
व्यननमाम्यहं ॥ श्रुगन्धादि ॥ ॥ ततासंकल्प ॥ ॥ अद्यवतवालाह ॥ श्रुद्यादि ॥
दक्षिणस्य ॥ ॥ ॐ गमर्ष्यगमर्षि ॥ श्रुमूकादंशुसफदिवसः यावकोपचानुपदा
नकर्मविः ॥ श्रुमूकनाम्रुपुतत्यमूकसंज्ञलोकपाफिकामनयाः पुगानिस्य
जनः तपूतसद्योदनगर्कनादविपकानेमासादिना ॥ नापयानवसूनिः याव
कल्पमहमूतमूजता ॥ ॥ धनकाखडाग ॥ धूनकावदक्षिणतयदी ॥
धनेतिदक्षिणसाकक्षकानयिहाडाडागतायूसिसमालद्रयाडाधु
थथेद्रसनिद्रविद्यविधिः ॥ ॥ वकनिद्रयाः वलानिर्याथथमाल

३७